RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 जनवरी 2022

बाल विज्ञान पत्रिका, जनवरी 2022

चकमक

मूल्य ₹50

1

प्रवासी पक्षी

रोहन चक्रवर्ती

अनुवाद: सजिता नायर

प्रवासी पक्षियों के फ्लाईवे के बारे में और जानने के लिए तुम पेज 29 पर दिया गया लेख पढ़ सकते हो।

अंक 424 • जनवरी 2022

चकमक

नया साल मुबारक!!

इस बार

प्रवासी पक्षी - रोहन चक्रवर्ती - 2
दानासुर - गुलज़ार - 4
मकड़ी का जाला - प्रमोद पाठक - 6
क्यों-क्यों - 8
नन्हा राजकुमार - एन्त्वॉन द सैंतेक्ज़ूपेरी - 10
इन्स्टलेशन कला - शेफाली जैन - 14
खेल गीत - 16
मध्याह्न कब होता है -आलोक मांडवगणे, वरुणी पी - 18
गणित है मज़ेदार - शून्य में..- भाग-1 - आलोका कान्हेरे - 20
दोस्ती - शिवम चौधरी - 23

तालाबन्दी में बचपन - तकिए में सुरक्षित ड्रेस - संध्या - 26
प्रवासी पक्षियों के फ्लाईवे - विनता विश्वनाथन - 29
तुम भी बनाओ - सजिता नायर - 31
तुम भी जानो - 32
मेरा पन्ना - 33
माथापच्ची - 38
चित्रपहेली - 40

सम्पादक
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

सहायक सम्पादक
मुदित श्रीवास्तव

सम्पादन सहयोग
सजिता नायर

वितरण
झनक राम साहू

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

आवरण चित्र: बिष्णु सारंगी
सामने आवासी पक्षी गजपांव (ब्लैक-विंग्ड स्टिल्ट) और पीछे यूरोप और एशिया के उत्तरी इलाकों से भारत में ठण्ड के महीनों में आनेवाला प्रवासी रफ पक्षी है। दोनों तटीय पक्षी हैं।

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

दानासुर

गुलज़ार

चित्र: अतनु रॉय

दानू है दानू
इतना-सा जानू...

छिपकली के नाना हैं
छिपकली के हैं ससुर
दानासुर, दानासुर... दानासुर

एक पुरानी पुस्तक की तस्वीर से निकले हैं
खोदा जब इतिहास तो, तकदीर से निकले हैं
दानू उनका छोटा नाम, पूरा नाम दानासुर

तानपुरे के नीचे दो मंजीरे जैसे पाँव
न कुत्ते की भौं-भौं, न बिल्ली की म्याऊँ
सोते हैं तराने में, दे धिन्ना-ना दानासुर!

मकड़ी का जाला

प्रमोद पाठक

चित्र: तविशा सिंह

मकड़ी की बुनाई पर तितली को बड़ा फख्र था। “किसका होगा ऐसा घर! इतना महीन! पारदर्शी! उस पार पूरी दुनिया देखी जा सके। न ज़मीन, न आसमान। हवा के बीचोंबीच झूलता।”

मगर मकड़ी के लिए यह काफी न था। वह तो तितली के रंगों पर फिदा थी। उसे बस यही लगता, “कितना धूसर रंग है उसके जाले का। कितना धूसर रंग है उसका अपना। तितली है कि बस रंगों में सराबोर रहती है। तितली खुद इतनी रंगीन है और जिन फूलों से मिलती है वे भी रंगीन हैं। काश कुछ हल्का-सा रंग उसकी बुनाई में भी आ जाता।” वह अपने जाले को देखती और उदासी से भर जाती।

ऐसी उदासी में एक दिन मकड़ी ने तितली से कहा, “तुम्हारे पास इतने रंग हैं। तुम जिन फूलों से मिलती हो उनके पास भी इतने रंग हैं। किसी दिन कहीं से थोड़ा रंग मेरे जाले के तारों में भर दो!” तितली से मकड़ी की यह उदासी देखी न जाती।

वह सर्दियों के दिन थे। फूलों की पँखुड़ियों, पेड़ों की पत्तियों और घासों पर सुबह-सुबह ओस सुस्ताने चली आती। जब तक धूप ऊपर न चढ़ आती, वहीं सुस्ताती। ओस जिस पँखुड़ी, पत्ती या घास पर बैठती उसी रंग में रंग जाती। यह हर रोज़ का सिलसिला था। मकड़ी को लगता, "काश उसके जाले में भी ऐसा कोई जादू होता। जिस फूल या पत्ती को छूता, उसी का रंग उसमें आ जाता।"

एक रोज़ सुबह-सुबह कुछ ओस मकड़ी के जाले पर सुस्ताने चली आई। कुछ देर बाद धूप आई। तितली ने देखा जाले में रंग भर गए हैं। एक नहीं, दो नहीं, पूरे के पूरे इन्द्रधनुषी रंग। जब तक ओस रही, जाला रंगों से सराबोर रहा। अब हर रोज़ कुछ ओस मकड़ी के जाले पर भी आने लगी।

हवा में हल्की-सी हलचल होती तो रंग लहरा उठते। लगता रंगों का खेत लहलहा उठा हो।

मकड़ी ने उस रात तितली की नींद में एक सपना बुना। सपने की बुनाई बहुत महीन थी। बड़ी नफासत थी उसमें। तितली की नींद खुली तो उसने पाया कि उसके पंखों पर खूब डिज़ाइन उभर आए हैं। मकड़ी के जाल से भी बारीक और नफासत भरे। उसने मकड़ी को देखा। वह अब भी नींद में सपने का जाल बुन रही थी।

क्यों-क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—

कहते हैं कि एक मोटे स्वेटर या जैकेट के बजाय कपड़ों की कई परतें पहनने से ज़्यादा गर्मी लगती है। ऐसा क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

अगली बार के लिए सवाल है—

तुम्हारे हिसाब से दुनिया का सबसे मुश्किल काम क्या है, और क्यों?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश

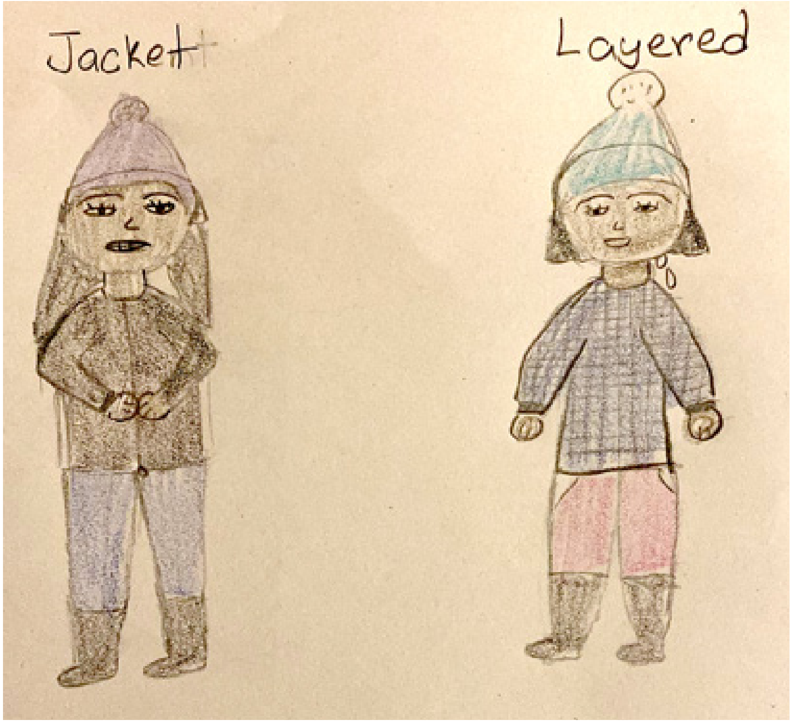

चित्र: सलोनी महिषी, पाँचवीं, डीएलआरसी, पुणे, महाराष्ट्र

मेरी राय में कई परत पहनने से अच्छी गर्मी लगती है। पैरों में भी हम कपड़ों की कई परत पहन सकते हैं, जबकि जैकेट या स्वेटर पैरों की ठण्ड कम नहीं करते। उदाहरण के लिए एक पतले कम्बल से थोड़ी ठण्ड लगती है और दो-तीन कम्बल से अच्छी गर्मी लगने लगती है।

सलोनी महिषी, पाँचवीं, डीएलआरसी, पुणे, महाराष्ट्र

अगर हम बहुत सारी लेयर पहनेंगे तो हम चल भी नहीं पाएँगे और कोई काम भी नहीं कर पाएँगे।

अर्चना, चौथी, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

हम जब बहुत कपड़े नहीं पहनते तो ज़्यादा ठण्ड लगती है। छत पर जाते हैं तो बहुत कपड़े पहनने की वजह से गर्मी लगती है। और हम सबको बहुत मोटे लगते हैं और हमें बहुत अजीब लगता है।

शिवानी, पाँचवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

क्योंकि मोटे स्वेटर के ऊपर ओस गिरती है तो स्वेटर गीला हो जाता है और ठण्ड लगती है। जबकि कपड़ों की कई परतें पहनने से ऊपर के कपड़ों पर ओस गिर भी जाए तो नीचे के कपड़े गरम होते हैं और गर्मी लगती है।

सरोजिनी, दस साल, अपना स्कूल तातियागंज, कानपुर, उत्तर प्रदेश

एक मोटे स्वेटर या जैकेट को पहनने से हम उतने मोटे नहीं होते हैं जितने कि कपड़ों की कई परत पहनने से होते हैं। और मेरा मानना है कि हम मोटे होंगे तो हमें ठण्ड नहीं लगेगी। मैंने लोगों को कहते भी सुना है कि हाड़ कँपाने वाली ठण्ड जो पतले लोग होते हैं उनकी हड्डियों तक पहुँच जाती है। वे कपकपाने लगते हैं, जबकि मोटे लोगों की हड्डियों तक ठण्ड नहीं पहुँच पाती है। इसलिए हमें कपड़ों की कई परत पहननी चाहिए ताकि हम हाड़ कँपाने वाली ठण्ड से भी बच जाएँ।

तनवी सोलंकी, पाँचवीं, वेदान्त अकैडमी, मनावर, धार, मध्य प्रदेश

जब हम मोटे स्वेटर या जैकेट पहनते हैं तब उनके अन्दर ज़्यादा छेद होते हैं, तो वे बहुत मोटे होते हैं। और ज़्यादा गर्मी नहीं होती है। पर जब कपड़ों की अनेक परत होती हैं तब हवा के लिए जगह नहीं होती है तो हम ज़्यादा गरम महसूस करते हैं।

कनिष्क पाटनकर, पाँचवीं, डीएलआरसी, पुणे, महाराष्ट्र

ऐसा शायद इसलिए क्योंकि अगर हम अन्दर से एक परत पहनेंगे और बाहर से एक स्वेटर या जैकेट पहनेंगे तो ठण्ड लगेगी। क्योंकि स्वेटर और जैकेट ठण्डे होते हैं। बहुत देर पहनने के बाद वह गरम होते हैं। मगर कपड़ों की परतें नरम और गरम होती हैं। इसलिए अगर हम कई परतें पहनेंगे तो ठण्ड शायद उतनी नहीं लगेगी। मैंने ध्यान दिया है कि जब मम्मी बहुत सारी परत पहनाती हैं तो ठण्ड कम लगती है।

दिव्यांशी जोशी, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

चित्र: कनिष्क पाटनकर, पाँचवीं, डीएलआरसी, पुणे, महाराष्ट्र

दूसरे ग्रह पर एक दम्भी रहता था।

"अह, हा! आ ही गया मेरा प्रशंसक।" दूर से राजकुमार को आते देखकर उसने कहा।

ऐसे दम्भी लोगों के लिए सारे लोग प्रशंसक होते हैं।

"नमस्कार! आपका टोप बड़ा दिलचस्प है।" राजकुमार ने कहा।

"है ना? उसने कहा। यह अभिवादन के लिए है। यह इसलिए है कि जब लोग मेरी जय-जयकार करें, प्रशंसा करें तो इसे सिर से उठाकर मैं अभिवादन का जवाब दूँ। पर दुर्भाग्यवश यहाँ कोई आता ही नहीं।"

"अच्छा?" राजकुमार बोला। उसकी समझ में कुछ नहीं आया।

"ताली बजाओ।" उस दम्भी ने आदेश दिया। राजकुमार ने ताली बजाई और उस व्यक्ति ने अपना टोप नम्र अभिवादन में उठा लिया।

उसे राजा से मिलने की अपेक्षा इससे मिलना अधिक दिलचस्प लगा। राजकुमार ने सोचा और उसने फिर ताली बजाई। दम्भी ने फिर टोप उठा लिया।

पाँच मिनट में ही इस खेल की एकरसता से राजकुमार ऊब गया।

"और टोप को नीचे लाने के लिए क्या करना चाहिए?" राजकुमार ने पूछा।

दम्भी ने सुना नहीं। ऐसे लोगों को अपनी प्रशंसा के अलावा कुछ नहीं सुनाई पड़ता।

"क्या तुम सचमुच मेरी प्रशंसा करते हो?" उसने राजकुमार से पूछा।

"प्रशंसा? क्या अर्थ होते हैं इसके?"

"प्रशंसा करने का अर्थ हुआ कि तुम मुझे इस ग्रह का सबसे सुन्दर, सबसे सुसज्जित, सबसे धनी और सबसे बुद्धिमान व्यक्ति समझते हो।"

"लेकिन तुम तो इस ग्रह के एकमात्र व्यक्ति हो!"

"तो क्या हुआ? तब भी मेरी प्रशंसा करना!"

अपने कन्धे हिलाते हुए राजकुमार ने कहा, "मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ। लेकिन आखिर अपनी प्रशंसा क्यों करवाना चाहते हो?" और राजकुमार वहाँ से चला गया।

अपनी यात्रा के दौरान उसने सोचा कि ये बड़े लोग बहुत अजीब होते हैं। अगले ग्रह में एक शराबी रहता था। वहाँ राजकुमार थोड़ी ही देर रहा पर उसका मन विषाद से भर आया।

भाग - 6

नन्हा राजकुमार

एन्त्वॉन द सैंतेक्ज़ूपेरी

अनुवाद: लालबहादुर वर्मा

अब तक तुमने पढ़ा...
लेखक को बचपन में बड़ों ने चित्र बनाने से हतोत्साहित किया तो वह पायलट बन बैठा। अपनी एक यात्रा के दौरान उसे रेगिस्तान में जहाज़ उतारना पड़ा। वहाँ उसकी भेंट एक नन्हे राजकुमार से हुई, जो किसी दूसरे ग्रह का निवासी है। राजकुमार ने लेखक को अपने ग्रह के बारे में बहुत-सी विचित्र बातें बताईं। आकाश से विचरते हुए उसने कुछ अलग-अलग ग्रहों में जाने के बारे में सोचा। पहले ग्रह में उसकी मुलाकात एक ऐसे राजा से हुई जो उस ग्रह पर अकेले रहता था।
अब आगे...

उसने देखा कि वह व्यक्ति कुछ खाली, कुछ भरी बोतलें लिए चुपचाप बैठा है। उसने पूछा, "क्या कर रहे हैं आप?"

एक उदास आवाज़ में उसने जवाब दिया, "पी रहा हूँ।"

"क्यों पी रहे हो?"

"भूलने के लिए।"

"क्या भूलने के लिए?" राजकुमार ने पूछा। वह उसकी हालत पर दुखी था।

"यह भूलने के लिए कि मैं शर्मिन्दा हूँ।" उसने स्वीकार किया। उसका सिर एक तरफ झूल रहा था।

"किस बात की शर्म!" राजकुमार ने ज़ोर देकर पूछा। "मुझे अपने पीने पर शर्म है।" उस पिअक्कड़ ने अपनी बात खतम करके एकदम से चुप्पी साध ली।

राजकुमार की कुछ समझ में नहीं आया। वह चल पड़ा, उसने सोचा कि ये बड़े लोग सचमुच बड़े अजीब होते हैं।

चौथे ग्रह का स्वामी एक व्यवसायी था। वह व्यक्ति इतना व्यस्त था कि उसने राजकुमार के आने की आहट पर अपना सिर तक नहीं उठाया।

"नमस्ते। आपकी सिगरेट बुझ चुकी है।" राजकुमार बोला।

"तीन, दो, पाँच। पाँच और सात, ग्यारह। नमस्कार। पन्द्रह और सात, बाइस। बाइस और छह, अट्ठाईस। उसे जलाने का वक्त नहीं है। छब्बीस और पाँच, इकतीस!

“और क्या। अगर तुझे एक हीरा मिल जाए जो किसी का न हो तो वह तेरा ही तो होगा। अगर तुझे एक लावारिस द्वीप मिले तो तेरा ही तो होगा! अगर तेरे दिमाग में कोई विचार पैदा हो और तू उसे राजपत्रित करा ले तो वह तेरा ही होगा। इसी तरह सितारे मेरे हैं क्योंकि मुझसे पहले किसी ने उन्हें अपनाने के बारे में नहीं सोचा।”

हूँ... तो कुल मिलाकर पचास करोड़ सोलह लाख बाइस हज़ार सात सौ इकतीस हुआ।”

“पचास करोड़ क्या?”

“अच्छा? तू मौजूद है अभी!”

“पचास करोड़... पचास करोड़ पता नहीं क्या... याद ही नहीं रहा। इतना काम है। बड़ा गम्भीर आदमी हूँ मैं। मैं बेकार की बातों में नहीं पड़ता। दो, पाँच, सात...”

“इक्यावन करोड़ क्या?” राजकुमार ने दोहराया। एक बार सवाल पूछने पर जीवन में उसने कभी किसी को उत्तर पाए बिना छोड़ा नहीं था।

व्यवसायी ने सिर उठाया। “मैं चौवन साल से इस ग्रह पर हूँ और इस बीच मेरे काम में केवल तीन बार बाधा पड़ी है। पहली बार बाईस साल हुए एक भौंरा न जाने कहाँ से गिर पड़ा था। इतनी ज़ोर की आवाज़ हुई कि मुझसे हिसाब में चार गलतियाँ हुईं। दूसरी बार, ग्यारह साल हुए मुझे गठिया हो गई थी। मैं व्यायाम तो कर नहीं पाता। मेरे पास खराब करने के लिए वक्त तो है नहीं। गम्भीर व्यक्ति जो ठहरा। तीसरी बार... ...यह रहे तुम! हाँ तो मैं कहाँ था इक्यावन करोड़ ...

“इक्यावन करोड़ क्या?”

व्यवसायी समझ गया कि उसे शान्ति नहीं मिलने वाली है।

“वे छोटी-छोटी चीजें जो कभी-कभी आसमान में दिखाई पड़ती हैं।”

“मक्खियाँ?”

“नहीं भाई। वे जो चमकती हैं।”

“जुगनू?”

“नहीं! नहीं! सुनहरी चीज़ें, जिन्हें देखकर आलसी लोग हवाई किले बनाने लगते हैं। लेकिन मैं ऐसा-वैसा आदमी नहीं, मुझे वक्त खराब करने की फुरसत नहीं।”

“अच्छा! सितारे?”

“हाँ! हाँ! सितारे!”

“इन पचास करोड़ सितारों से तेरा क्या मतलब?”

“पचास करोड़ नहीं – पचास करोड़ सोलह लाख बाइस हजार सात सौ इकतीस। मैं इधर-उधर की बात नहीं करता। मैं गलती नहीं करता।”

“क्या करता है तू इन सितारों का?”

“उनका मैं क्या करता हूँ?”

“हाँ।”

“कुछ नहीं – बस मैं उनका मालिक हूँ।”

“तू सितारों का मालिक है?”

“हाँ।” “लेऽऽ.......किन मैं एक राजा को जानता हूँ जो... वो राजा कहता था सब पर उसी का राज्य है।”

“राजाओं का कुछ नहीं होता। बस वे शासन करते हैं। रखना और शासन करना अलग-अलग चीज़ें हैं।”

“इन सितारों का मालिक होने से तुझे क्या मिलता है?”

“मैं इनकी वजह से धनी हूँ।”

“और धनी होने से फायदा?”

“अगर और किन्हीं सितारों का पता चले तो मैं उन्हें खरीद सकता हूँ।”

राजकुमार ने सोचा कि यह तो बिलकुल उस शराबी जैसे तर्क दे रहा है।

“अरे भाई! सितारों को कोई कैसे रख सकता है?” कैसे उनका मालिक बन सकता है?”

“तो किसके हैं ये सितारे?” व्यवसायी ने खीजकर पूछा।

“मुझे नहीं मालूम – शायद किसी के नहीं।”

“अगर किसी के नहीं है तो मेरे हैं। क्योंकि सबसे पहले मैंने ही ऐसा सोचा है।"

“सोचना काफी होता है?”

“और क्या। अगर तुझे एक हीरा मिल जाए जो किसी का न हो तो वह तेरा ही तो होगा। अगर तुझे एक लावारिस द्वीप मिले तो तेरा ही तो होगा! अगर तेरे दिमाग में कोई विचार पैदा हो और तू उसे राजपत्रित करा ले तो वह तेरा ही होगा। इसी तरह सितारे मेरे हैं क्योंकि मुझसे पहले किसी ने उन्हें अपनाने के बारे में नहीं सोचा।”

“यह तो ठीक है। पर तू करेगा क्या इनका?”

“मैं उनकी देखभाल करता हूँ। मैं उन्हें बार-बार गिनता हूँ। काम मुश्किल है। पर मैं गम्भीर और व्यस्त आदमी हूँ ना!”

राजकुमार को सन्तोष नहीं हुआ।

“अगर मेरे पास एक मफलर हो तो मैं उसे गले के चारों ओर लपेट सकता हूँ। मैं उसे जहाँ चाहूँ ले जा सकता हूँ। यदि मेरे पास एक फूल हो तो मैं उसे तोड़ सकता हूँ। जो चाहे कर सकता हूँ। लेकिन तू सितारों को तोड़ नहीं सकता!”

“यह ठीक है। पर मैं उन्हें बैंक में डाल सकता हूँ।”

“क्या माने हुए इसके?”

“इसका मतलब हुआ कि इन सितारों की संख्या एक कागज़ पर लिखकर मैं उसे दराज़ में बन्द कर सकता हूँ।”

“इतना काफी है। बस?”

राजकुमार को यह बात मज़ेदार लगी। बात काव्यात्मक थी पर गम्भीर नहीं।

गम्भीर बातों के विषय में उसके विचार वयस्कों से बहुत भिन्न थे।

“मैं,” उसने कहा, “मेरे पास एक फूल है जिसे मैं रोज़ सींचता हूँ। मेरे पास तीन ज्वालामुखी हैं जिनकी मैं हर हफ्ते सफाई करता हूँ – उसकी भी जो सुप्त है – कौन जाने...। ये फूल और ज्वालामुखी मेरे हैं। इससे उन्हें लाभ होता है – मैं उनके लिए उपयोगी हूँ। लेकिन तू... तू सितारों के किसी काम नहीं आता है...?”

व्यवसायी का मुँह खुला, पर उत्तर में उसके पास कोई शब्द नहीं था। राजकुमार वहाँ से भी चल पड़ा। उसने सोचा कि सचमुच ये वयस्क लोग अजीब होते हैं।

अगले अंक में जारी...

इन्स्टलेशन कला

शेफाली जैन

इन्स्टलेशन कला की अनुभूति के लिए सभी इन्द्रियों का इस्तेमाल ज़रूरी होता है। इसलिए इसे महसूस करने के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि तुम इसके सामने खुद मौजूद हो। पर चूँकि मैं तुम्हें यह इन्स्टलेशन चित्र और शब्दों के माध्यम से दिखा रही हूँ और तुम इसके सामने फिलहाल मौजूद नहीं हो, इसलिए इसकी अनुभूति के बारे में मैं तुम्हें अपने खुद के अनुभव के सहारे समझाने की कोशिश करती हूँ।

मैंने इस आर्टवर्क को कई साल पहले एमएस यूनिवर्सिटी, वड़ोदरा में देखा था। तब मैं वहाँ कला की पढ़ाई कर रही थी। हर साल मई महीने में सभी विद्यार्थी मिलकर एक प्रदर्शनी का आयोजन करते थे जिसमें वे अपने-अपने आर्टवर्क प्रस्तुत करते थे। ऐसी ही एक प्रदर्शनी के दौरान मेरा इस आर्टवर्क से परिचय हुआ और भावसिंह से भी। 'पर्सनल टच' नामक ये आर्टवर्क मेरे लिए उस समय एक नई अनुभूति था। इसे देखकर मैं थोड़ा असमंजस में पड़ गई थी। यह क्या? तीन छोटे डिब्बे जिनमें एक तरफ गोलाकार खिड़कियाँ कटी हुई हैं जिन पर काला पर्दा है। इसके अलावा कुछ खास दिखाई नहीं दे रहा था। डिब्बों के पास एक नोट लिखा था – "डिब्बों के अन्दर हाथ डालें और महसूस करें।" पहले तो मैं थोड़ा सहम गई। पता नहीं क्या होगा अन्दर! आखिर में मेरी जिज्ञासा मेरे डर से ज़्यादा बढ़ गई और मैंने पहले डिब्बे की गोल खिड़की के अन्दर हाथ डाल दिया। ओह! हाथ डालते ही मैंने उसे एकदम वापस खींच लिया। अन्दर कुछ ठण्डापन, गीलापन और लिसलिसापन-सा महसूस

चित्र में दिखाई दे रहा इन्स्टलेशन (संस्थापन कला) भावसिंह भांभाणिया ने बनाया है।

हुआ – जैसे मैंने किसी छिपकली या फिर ऐसे ही किसी जीव की चमड़ी छू ली हो ! मैं इस डिब्बे को छोड़ दूसरे डिब्बे की तरफ बढ़ी। उसमें हाथ डाला तो कुछ गोलाकार, दरदरा और चुभता-सा महसूस हुआ। तीसरे में कुछ ऊबड़खाबड़, खुरदुरा और ठण्डा महसूस हुआ। अब मैं मन ही मन इन एहसासों को अपने पुराने अनुभवों में ढूँढने लगी। क्या यह फलाना चीज़ हो सकती है? क्या इसका एहसास मेरे किसी और अनुभव से मेल खाता है?

मैंने एक बार फिर से तीनों डिब्बों में हाथ डालकर देखा। अब मेरी शुरुआती हिचकिचाहट दूर हो चुकी थी तो मैं कुछ देर तक इन चीज़ों को छूकर महसूस करती रही। और फिर कुछ-कुछ अन्दाज़ा मिलने लगा। दूसरे डिब्बे में शायद एक साबुत नारियल था, छिलके समेत। तीसरे में तो पक्का फूल गोभी ही थी पर पहले में क्या था वह मैं बूझ नहीं पाई।

खैर, यह था मेरा अनुभव। और ये रहे, इस अनुभव से उठे दो सवाल।

- क्या कला केवल आँखों से देखकर पहचानने के लिए है?
- क्या कला का मकसद केवल कुछ जानी-मानी या फिर जानी-पहचानी बातों या चीज़ों को नए रूपों में साझा करना है या फिर दर्शकों के विचारों को टटोलना और उनके मन में सवाल खड़े करना भी है?

यह दो प्रश्न कला के इतिहास में पहले भी पूछे जा

इन्स्टलेशन कला का एक ऐसा रूप है जिसकी अनुभूति सिर्फ देखने पर निर्भर नहीं होती। इन्स्टलेशन कला ध्वनियों, दृश्यों, गन्धों, स्वाद, वस्तुओं और अनुपस्थितियों को भी अपना हिस्सा बना सकती है। कलाकार इन सब या फिर इनमें से कुछ चीज़ों के माध्यम से एक अनुभव का निर्माण करते हैं और इस तरह तैयार होती है इन्स्टलेशन कला। इन्स्टलेशन में एक और चीज़ जुड़ सकती है – स्थान। इन्स्टलेशन के मायने केवल कलाकार द्वारा प्रस्तुत की गई चीज़ों से ही नहीं, बल्कि ये चीज़ें जिस स्थान पर रखी गई हैं उससे भी ताल्लुक रखते हैं। स्थान बदल जाने पर इस कला के मायने भी बदल सकते हैं।

चुके हैं और इनके कारण कला ने अपने रूप और अपनी सीमाएँ भी बदली हैं। इन्स्टलेशन कला कुछ ऐसे ही सवालों के जवाब के रूप में पैदा हुई।

भावसिंह के आर्टवर्क में कुछ चीज़ें मैं छूकर पहचान पाई। पर कुछ नहीं पहचान पाई। लेकिन अगर कला का मकसद प्रस्तुति को केवल पहचानना नहीं है, तो फिर शायद भावसिंह अपने आर्टवर्क को मेरी आँखों से छुपाकर मुझे मेरी दूसरी इन्द्रियों का इस्तेमाल करने की तरफ मोड़ रहे हैं। शायद वे मुझे सोचने पर मजबूर कर रहे हैं कि हम इस दुनिया को आँखों के सिवा और कई तरीकों से देखते हैं – छूकर, सूँघकर, स्वाद लेकर, कल्पना करके, विचार करके आदि। एक और बात मेरे ज़ेहन में रह गई। यह आर्टवर्क अनुभव करने के बाद अगली बार जब मैं किसी ऐसे व्यक्ति से मिलूँ जो आँखों से नहीं देख पाता हो तो शायद मैं उसके देखने के तरीकों पर गौर करूँ, बजाय इसके कि उसके न देख पाने का दुख ज़ाहिर करूँ। मज़े की बात तो यह है कि भावसिंह का आर्टवर्क उन लोगों के लिए भी बना है जो आँखों से नहीं, बल्कि दूसरी इन्द्रियों से दुनिया देखते हैं।

यह आर्टवर्क हमें कला प्रदर्शनियों के बारे में भी फिर से सोचने पर मजबूर करता है। क्या कला प्रदर्शनियाँ केवल उन लोगों के लिए होती हैं जो आँखों से देख पाते हैं? अगर नहीं, तो हमें सोचना होगा कि हम किस-किस तरह की अनुभूतियों को कला के द्वारा उजागर करते आए हैं और भविष्य में करना चाहेंगे। क्या हम भावसिंह के काम से प्रेरित होकर कला के मायने फैलाएँगे? और कला के चाहने वालों में उनको भी शामिल करेंगे जिन्हें कला की दुनिया नज़रअन्दाज़ करती आई है?

ये ऐसे खेल गीत हैं जो शहरो में बच्चे खेलते-गाते हैं या उन्हें गाते-खेलते हैं। ऐसे गीत बचपन के बाद गुम होते चले जाते हैं – इतने कि भूमिगत हो जाते हैं। हमने इन्हें खोदकर निकाला है।

अंकुर, पिछले चौंतीस सालों से शिक्षा के क्षेत्र में संवाद और रियाज़ के ज़रिए लगातार सक्रिय है। हमारे प्रयोग के ये ठिकाने दिल्ली के पाँच कामगार इलाकों में चलते हैं। यहाँ बच्चे-बच्चियाँ और किशोर-किशोरियाँ सुनने-बोलने-लिखने और पढ़ने का आनन्द उठाते हैं। साथ ही मीडिया के तमाम रूपों के ज़रिए अपने अनुभवों को ज़ुबान देते हैं।

खेल गीत

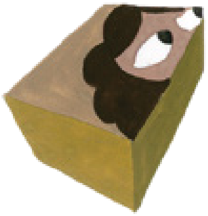

संग्रहकर्ता – कुलविन्दर कौर

संवादक – अंकुर

चित्र: वसुन्धरा अरोरा

अंकुर लर्निंग कलेक्टिव के कलमकारों का संग्रह
(कलमकारों की उम्र 8 से 10 साल)

एप्पल काटा नाइफ से

इस खेल को दो बच्चे खेलते हैं। आमने-सामने खड़े होकर दोनों अपने हाथों को आगे-पीछे, उल्टे-सीधे करके तालियाँ बजाते हुए इसे गाते हैं। 'मार खाई वाइफ से' इस लाइन के आने पर दोनों एक-दूसरे के गाल पर चाँटा मारने का अभिनय कर गेम खतम करते हैं।

एप्पल काटा नाइफ से
जूस पिया पाइप से
ये कैसा ज़माना आया
मार खाई वाइफ से...

छुपम छुपाई

छुपम-छुपाई
इण्डा पिण्डा पापड़ पिण्डा
ठा ठू ठस इडली बिडली
हू आर यू
छुपम-छुपाई
तेरे बाप की सगाई
तूने चाय न पिलाई,
तुझे शरम न आई...

यह खेल कई सारे बच्चे-बच्चियाँ मिलकर आइस-पाइस खेलने की तैयारी में खेलते हैं। आइस-पाइस में पहले किसकी बारी होगी इसे चुनने के लिए सब 'छुपम छुपाई तेरे बाप की सगाई' कहते हैं और जो अन्त में बचता है उसकी बारी मान ली जाती है।

मध्याह्न कब होता है?

लोकल नून पता करने के तीन तरीके

आलोक मांडवगणे और वरुणी पी

क्या तुम बता सकते हो कि मध्याह्न (noon) कब होता है? शायद तुमने सुना हो कि ये वो समय है जब सूर्य आकाश में सबसे ज़्यादा ऊँचाई पर होता है। क्या यह तुम्हारे लिए दिन के 12 बजे होता है?

अब ये कैसे पता करोगे कि सूर्य कितनी ऊँचाई पर है? सूर्य को देखकर तो पता लगाया नहीं जा सकता – क्योंकि सूर्य को सीधे-सीधे **कभी नहीं** देखना चाहिए!! लेकिन एक तरीका है। तुम अपनी परछाई को देखकर ज़रूर इस बात का पता लगा सकते हो... आसमान में सूर्य जितनी ऊँचाई पर होगा, उतनी ही छोटी तुम्हारी परछाई होगी।

दिन का वो समय जब तुम्हारी परछाई सबसे छोटी होती है **लोकल नून (स्थानीय मध्याह्न)** कहलाता है। आम तौर पर, तुम 82.5°E के जितने करीब होगे, तुम्हारा लोकल नून 12 बजे आइएसटी के उतने ही करीब होगा।

प्रयागराज के पास 82.5°E देशान्तर देश का एक केन्द्रीय स्थल है। यहाँ का समय ही भारतीय मानक समय (इंडियन स्टैन्डर्ड टाइम – आइएसटी) माना जाता है। हम सब अपनी घड़ियों और फोन का समय इसी से मिलाते हैं।

तुम्हारे लिए लोकल नून कब है?

अपनी परछाई को नापो

तुम्हारा लोकल नून कब है इसका पता लगाने के लिए सबसे पहले यह देखो कि तुम्हारी परछाई दिन में सबसे छोटी कब है। सुबह 10.30 बजे से लेकर दोपहर के 1.30 बजे तक हर कुछ मिनटों पर अपनी परछाई की लम्बाई नापते रहना। तुम्हारी परछाई सबसे छोटी कब है? तुम्हारा लोकल नून उसी समय या फिर उसके आसपास है।

तुम्हें समझ में आ गया होगा कि सबसे छोटी परछाई का समय 12 बजे आइएसटी से पहले या बाद में हो सकता है!

पहले ऐज़वाल (मिज़ोरम) में परछाइयाँ सबसे छोटी होती हैं, फिर जबलपुर (मध्य प्रदेश) में और फिर भुज (गुजरात) में। लेकिन सबसे छोटी परछाई का समय नैनीताल (उत्तराखण्ड), जबलपुर और पुदुचैरी (पुदुचैरी) में एक ही होता है! क्या तुम बता सकते हो कि लोकल नून का समय पूर्व से पश्चिम की ओर और उत्तर से दक्षिण की ओर कैसे बदलता है?

ऐसा क्यों होता है?

चूँकि सूर्य पूर्व की ओर उगता है, पूर्व की ओर की जगहों के लोग (जैसे कि ऐज़वाल) पश्चिमी जगहों (जैसे कि भुज) से पहले सूर्योदय को देख पाएँगे। इसी तरह पूर्वी देशान्तरों पर सूर्य आसमान में सबसे ज़्यादा ऊँचाई पर पश्चिमी देशान्तरों से पहले होगा। तो देश के पूर्वी क्षेत्रों में लोकल नून पश्चिमी क्षेत्रों से पहले होता है।

नैनीताल, जबलपुर और पुदुचैरी जैसे जगहों के देशान्तर लगभग समान हैं और इन जगहों पर सूर्य लगभग उसी समय आसमान में सबसे ज़्यादा ऊँचाई पर होगा। तो हम ऐसा कह सकते हैं कि एक ही देशान्तर पर स्थित जगहों पर लोकल नून एक ही समय पर होगा।

लोकल नून पता लगाने के अन्य तरीके

लोकल नून दिन का ठीक बीच होता है

दिन सूर्योदय से शुरू और सूर्यास्त से खतम होता है। सूर्योदय के बाद सूर्य आसमान में ऊँचा चढ़ता जाता है फिर सूर्यास्त तक नीचे उतर जाता है। तो मध्याह्न को हम दिन के बीच के समय के रूप में भी सोच सकते हैं – यानी कि सूर्योदय और सूर्यास्त के ठीक बीच का समय।

अपने गाँव या शहर में आज के सूर्योदय और सूर्यास्त के समय का पता लगाओ। इन दोनों के बीच का समय दिन की लम्बाई होगी। इनके एकदम बीच का समय मध्याह्न होगा। ये वही समय है जब सूर्य आसमान में सबसे ऊँचा होगा यानी कि तुम्हारा लोकल नून।

क्या यह वही समय था जब तुमने अपनी सबसे छोटी परछाई नापी थी?

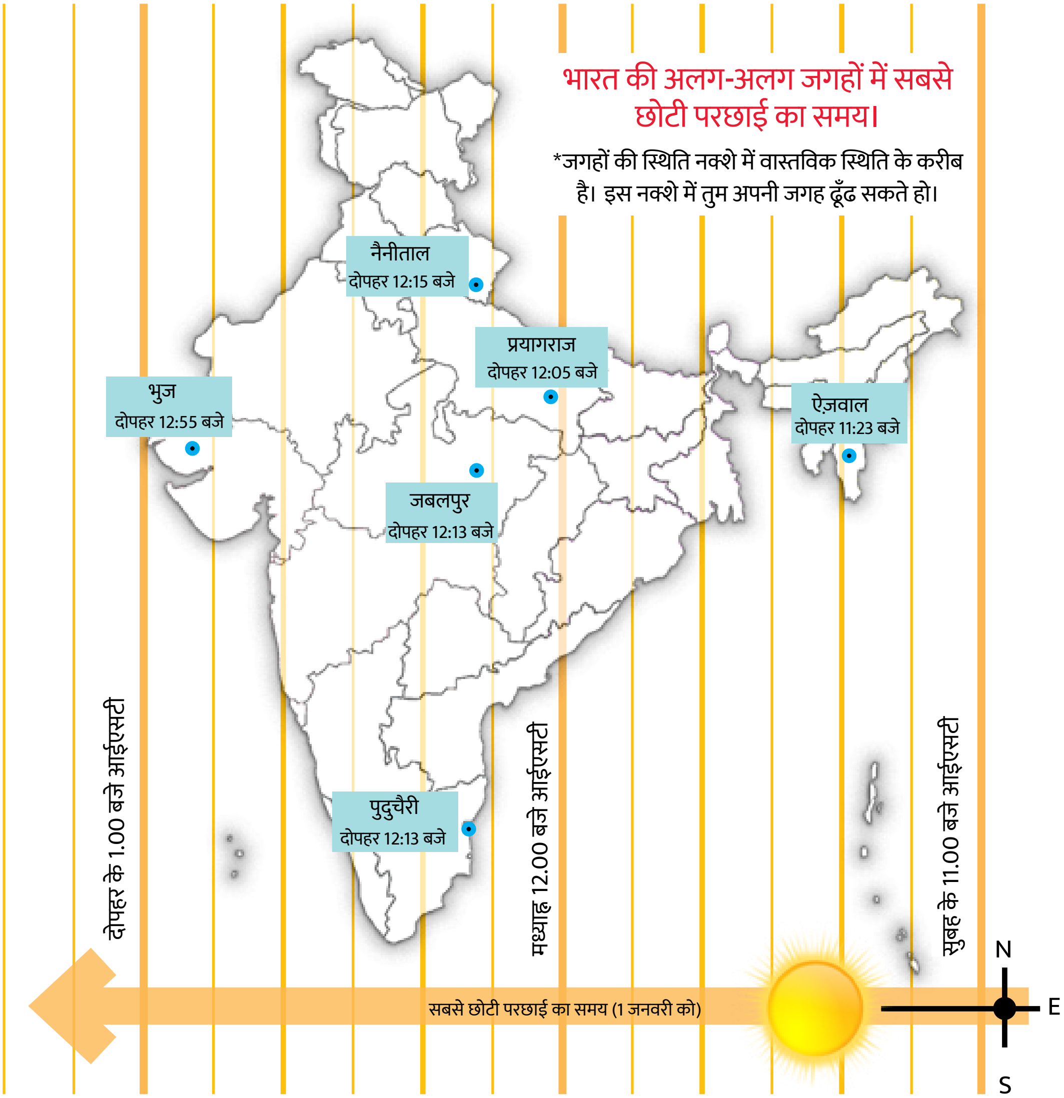

अगर एकदम सटीक लोकल नून जानने की इच्छा हो तो...

किसी भी दिन ठीक-ठीक लोकल नून कब है यह जानने के लिए तुम इस ऐप का भी इस्तेमाल कर सकते हो: alokm.com/zsdapp

मध्याह्न 12 बजे आईएसटी और लोकल नून

आम तौर पर अगर तुम देश के पूर्वी क्षेत्र में हो तो तुम्हारा लोकल नून 12 बजे आईएसटी से पहले होगा और देश के पश्चिमी क्षेत्रों में हो तो 12 बजे आईएसटी के बाद।

तो 12 बजे आईएसटी तुम्हारा लोकल नून हो यह ज़रूरी नहीं है। तुम जिस जगह में हो वहाँ का लोकल नून तब है जब सूर्य आसमान में सबसे ऊँचा है और तुम्हारी परछाई सबसे छोटी है। यह उस खास दिनांक के लिए लागू है। इसीलिए तो इसे लोकल नून कहा जाता है!

आलोक मांडवगणे भोपाल के आर्यभट फाउण्डेशन और वरुणी पी चैन्नई के गणितीय विज्ञान संस्थान में कार्यरत हैं।

शून्य में क्या बात है

आलोका कान्हेरे

चित्र: मधुश्री बासु

क्या तुमने कभी सोचा है कि हम शून्य को दर्शाने के लिए प्रतीक का इस्तेमाल क्यों करते हैं? चीज़ों के बारे में बताने के लिए हम कभी शून्य का इस्तेमाल उस तरह नहीं करते जैसे कि अन्य संख्याओं का करते हैं।

जैसे कि हम कहते हैं, “मेरे पास 2 पैन हैं” या “उसके पास 5 कंचे हैं”। लेकिन हम कभी नहीं कहते, “उस कमरे में 0 बाघ हैं।”

तो फिर हमें इस प्रतीक की क्या ज़रूरत है?

यदि तुम्हारे मन में कभी यह सवाल आया है तो ऐसा सोचने वाले तुम अकेले नहीं हो। कई सदियों से लोग शून्य के बिना भी गणित और विज्ञान करते रहे हैं। यदि हम रोमन सभ्यता या बेबीलोनियन सभ्यता से मिले सबूत देखें तो इस बात के कोई संकेत नहीं मिलते हैं कि वे शून्य का इस्तेमाल करते थे या उन्हें शून्य की ज़रूरत थी। हम शून्य का इस्तेमाल कहाँ करते हैं? 105 जैसी संख्याओं को लिखने के लिए।

शून्य क्यों ज़रूरी है यह समझने के लिए अपनी संख्या प्रणाली पर एक नज़र डालते हैं।

जब मैं 125 लिखती हूँ तो मैं जानती हूँ कि यह संख्या एक सौ पच्चीस है। और 125 ये संख्या दर्शाती है कि मेरे पास 1 सैकड़ा, 2 दहाई और 5 इकाई हैं जो मिलकर एक सौ पच्चीस बनाते हैं। तो यदि मुझे एक सौ पाँच लिखना हो तो मैं क्या करती हूँ। मैं इसे 105 के रूप में लिखती हूँ। इसका मतलब है 1 सैकड़ा, 0 दहाई और 5 इकाई। तो हम शून्य को ‘स्थान धारक’ (place holder) के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। ऊपर

1 सैकड़ा + 2 दहाई + 5 इकाई

1 सैकड़ा + 0 दहाई + 5 इकाई

गणित मज़ेदार

इन पन्नों में हम कोशिश करेंगे कि कुछ ऐसी चीज़ें दें जिनको हल करने में तुम्हें मज़ा आए। ये पन्ने खास उन लोगों के लिए हैं जिन्हें गणित से डर लगता है।

बताए गए उदाहरण में शून्य दहाई का स्थान ले लेता है। शून्य के बिना 105 और 15 एक जैसे ही दिखेंगे।

तो सवाल यह उठता है कि रोमन और बेबीलोनियन क्या करते थे। रोमन संख्याओं से तो हम सभी परिचित हैं। वे कुछ खास संख्याओं जैसे कि एक, पाँच या दस... के लिए प्रतीकों का इस्तेमाल करते थे और अन्य संख्याओं को लिखने के लिए इन प्रतीकों का उपयोग करते थे। नीचे दी गई तालिका देखो।

रोमन संख्याएँ

प्रतीक	I	V	X	L	C	D	M
मान	1	5	10	50	100	500	1000

दो लिखने के लिए रोमन लोग II उपयोग करते थे जिसका मतलब होता है दो इकाई। तीन को भी इसी तरह लिखा जाता है। लेकिन चार के लिए IV का उपयोग किया जाता था, जिसका मतलब होता है 5 – 1 = 4।

IX किसके लिए उपयोग होगा?

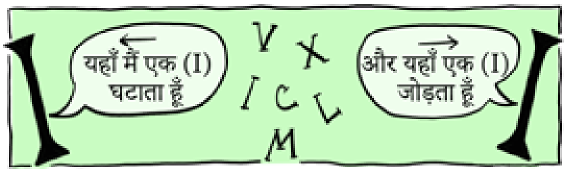

रोमन लोग एक सौ दो को कैसे लिखते होंगे?

तो वो लोग जिस तरह से संख्याओं को लिखते थे उन्हें वास्तव में शून्य की ज़रूरत नहीं थी। क्या तुम ऊपर दी गई तालिका को देखकर पता कर सकते हो कि यदि हम अभी भी रोमन संख्याओं का इस्तेमाल करें तो हमें किन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा?

संख्याओं को लिखने की बेबीलोनियन प्रणाली रोमन लोगों की तुलना में कहीं ज़्यादा कठिन थी। यह प्रणाली पहली बार 2000 ईसा पूर्व यानी कि 4000 हज़ार साल पहले अस्तित्व में आई थी। बेबीलोनियन लोग रोमन संख्याओं से अलग केवल दो ही प्रतीक इस्तेमाल करते थे।

एक बेबीलोनियन टेबलेट

एक को दर्शाता है और दस को दर्शाता है। बेबीलोनियन सभी संख्याओं को लिखने के लिए इन दो प्रतीकों का इस्तेमाल करते थे। नीचे दिए गए उदाहरण देखो।

एक से उनसठ तक की बेबीलोनियन संख्याएँ

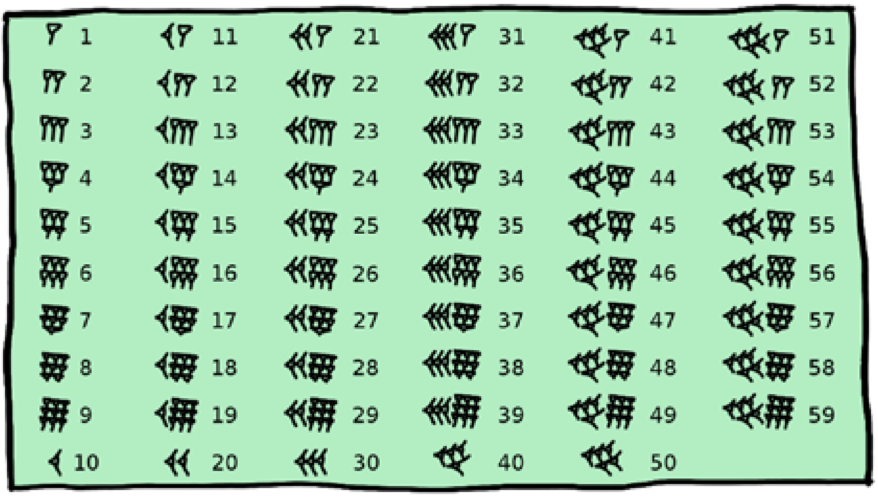

तो का मतलब हुआ दो क्योंकि यह दो इकाई था। और का मतलब हुआ 21 क्योंकि यह दो दहाई और एक इकाई (एक) है। चित्र में दिखाए गए तरीके से यह प्रणाली आगे भी ऐसे ही चलती रही।

तो अब सवाल उठता है कि साठ के लिए उन्होंने क्या इस्तेमाल किया। यहाँ पर समस्या आती है। साठ के लिए वे फिर से इस प्रतीक का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन इसके बाद वो एक खाली जगह रखते हैं। तो इकसठ को इस तरह , दर्शाया जाता था, जो ऊपर चित्र में दर्शाए गए दो से अलग है। एक तरह से बेबीलोनियन शून्य को दर्शाने के लिए 'कुछ नहीं' का इस्तेमाल करते थे।

बेबीलोनियन साठ से बड़ी संख्याओं को 60 के गुणजों में तोड़कर लिखते थे और बची हुई संख्या को ऊपर चित्र में दिखाए गए तरीके से लिखते थे। तो 80 = 60 + 20 को वो इस तरह लिखते,

60 10 + 10

एक सौ बीस साठ का दुगुना हुआ, उसी तरह जैसे एक का दुगुना हुआ दो। इसलिए एक सौ बीस हुआ

(60 + 60)

इसलिए, एक सौ इक्कीस यानी कि एक सौ बीस और एक हुआ

(60 + 60) 1

कोशिश करके देखो कि बेबीलोनियन एक सौ पचास को कैसे लिखते होंगे।

बेबीलोनियन ने शून्य को 'कुछ नहीं' होने का जो भाव दिया था उसे स्टोन टेबलेट पर भी देखा जा सकता है। स्टोन टेबलेट में गणितीय सवाल लिखे थे जिसमें 20-20 की गणनाएँ शामिल थीं, लेकिन जवाब के लिए जगह खाली छोड़ दी गई थी।

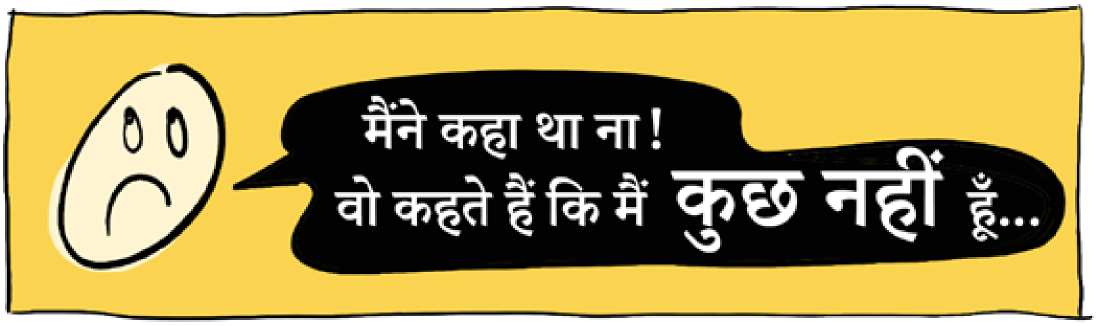

अगले अंक में जारी...

दोस्ती

शिवम चौधरी

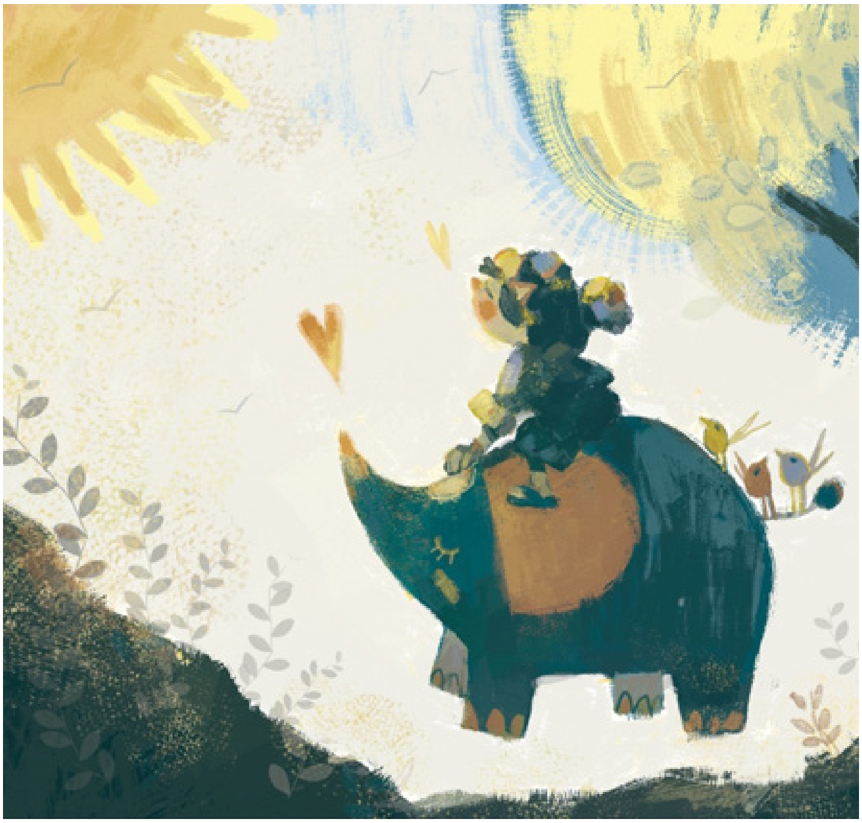

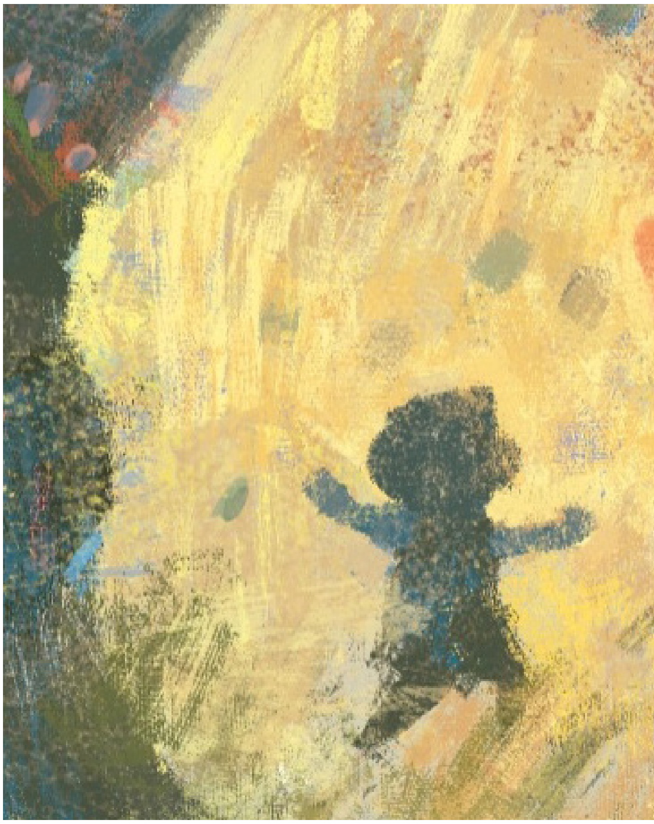

तालाबन्दी में बचपन

तकिए में सुरक्षित ड्रेस

संध्या

चित्र: आनन्द शिनॉय

कोरोना क्या आया, पूरे सावदा में लॉकडाउन लग गया। स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे अपने घरों में बैठे बोर होने लगे। कुछ प्रवासी मज़दूर जो सावदा स्कूल के ए ब्लॉक में आए थे, स्कूल में ही ठहर गए।

बोनदीता खिड़की से झाँकते हुए यही सब सोच रही थी। उसके घर में रखे हुए टीवी पर हँसने वाला प्रोग्राम आ रहा था। लेकिन किसी को हँसी आ नहीं रही थी। क्योंकि लॉकडाउन ने लोगों को रोने पर मजबूर कर दिया था। तभी पापा के फोन से 'ढोल-मंजीरा बाजे और नाचे चखरी' गाने की आवाज़ आने लगी। वह अलसाए हुए हाथ से फोन उठाकर बोली, "हैलो कौन?"

ऐसा लग रहा था कि उसकी सारी फुर्ती खो गई है। खेलने का कोई मौका न होने के कारण आँखें टीवी में गड़ी रहतीं। पूरे समय घर के अन्दर रहने की वजह से शरीर भी पीला-पीला दिखने लगा। तभी उधर फोन से आवाज़ आई, "बोनदीता मैं तेरी बुआ बोल रही हूँ। कैसी है? तूने खाना खाया क्या? मम्मी कैसी हैं?" बुआ ने सवालों की झड़ी लगा दी।

बोनदीता बोली, "नहीं, मैंने अभी खाना नहीं खाया। अभी जाकर खाऊँगी।"

वह सोचने लगी। रोज़-रोज़ वही अरहर की दाल और चावल खाकर बोर हो गई हूँ। पैसा भी तो नहीं है कि रोज़ बाज़ार जाकर सब्ज़ी खरीदकर लाएँ। बस कभी-कभार घर में आलू की सब्ज़ी बन जाती है। वह तो पापा गाँव से पिछले महीने आए थे न, सो अरहर की दाल और आलू-चावल लेते आए थे। उसकी वजह से भूखों मरने से बचे।

तभी वह बोली, "अच्छा बुआ आप तो ठीक हो ना और ज्योति ठीक है ना!" उधर से बुआ बोलीं, "हाँ! बस वह भी ऑनलाइन पढ़ती है। इस वजह से फोन खाली ही नहीं रहता है।"

"और बुआ गर्मी के मौसम में आम खाने को मिले या नहीं।"

बुआ बोलीं, "इस साल गर्मी में आम के पेड़ पर बहुत सारे फल लगे थे तो हमने बहुत आम खाए। और तुम्हारे लिए हमने आम का अचार बना रखा है। जब कोरोना खतम हो तो पापा के साथ आना और अचार ले जाना।"

"बुआ इस बार तो हम लोग कोरोना के डर से गाँव नहीं आ पा रहे हैं। पापा का काम कभी चलता है तो कभी नहीं। थोड़ी पैसों की भी दिक्कत है। और चाचा तो ड्यूटी पर ही फँस गए हैं। अब जाकर उनका आना-जाना शुरू हुआ है।" यह कहकर बोनदीता ने फोन रख दिया।

बोनदीता फोन रख ऊपर छत की तरफ जा ही रही थी कि फिर किसी अनजान नम्बर से फोन में वही गाना बजने लगा। बोनदीता ने नीचे आकर फोन कान पर लगा लिया।

"हैलो कौन?"

फोन से आवाज़ आई, "मैं सुषमा मैम बोल रही हूँ।"

"ओह... मैम आप बोल रही हो। मुझे नहीं पता था कि यह आपका नम्बर है। वैसे आपने किसलिए फोन किया है?"

मैम बोलीं, "कल से तुम्हारे स्कूल खुल रहे हैं। कल से स्कूल आना है। तुम्हारा रोल नम्बर कितना है?"

बोनदीता बोली, "मैम, मेरा रोल नम्बर 32 है। मैम, मेरे स्कूल वाले साथी जो मेरी ही गली में रहते हैं उन्हें भी बताना है क्या?"

मैम बोलीं, "हाँ उन्हें भी बता देना। लेकिन याद रखना कि एक से लेकर 30 तक के रोल नम्बर वाले बच्चे ही कल आएँगे। बाकी 31 से लेकर 60 तक के रोल नम्बर वाले बच्चे परसों आएँगे।"

"ठीक है, मैम।"

"बेटा अब मैं फोन रखती हूँ।"

बोनदीता फोन कूलर पर रखकर ऊपर गई। और मम्मी को यह खुशखबरी सुनाई "मम्मी, कल से स्कूल खुल रहे हैं। लेकिन मैम ने मुझे अपने रोल नम्बर के हिसाब से परसों से आने के लिए बोला है।"

यह सुन मम्मी बोलीं, "ठीक हुआ। कम से कम तेरा स्कूल तो खुल जाएगा।"

बोनदीता बोली, “मम्मी मेरी स्कूल वाली नीली ड्रेस किधर रखी है?”

मम्मी बोलीं, “अरे! मैंने तेरी ड्रेस यह सोचकर तकिए में डाल दी कि तेरा स्कूल अभी नहीं खुलेगा। अब तो फिर से तकिए की सिलाई खोलनी पड़ेगी और दुबारा से तकिए को सिलना पड़ेगा। देखती हूँ किस तकिए में तेरी ड्रेस डाल दी है।”

बोनदीता खुशी के मारे बोली, “मम्मी प्लीज़ चलो ना। अभी तकिए की सिलाई खोलो। मुझे अभी अपनी ड्रेस निकालनी है।”

वो दोनों नीचे गईं। मम्मी ने बेड पर पड़े एक तकिए को उठाया। वह तकिया बोनदीता के ड्रेस वाला तकिया नहीं था। उस तकिए को वहीं फेंककर मम्मी ने दूसरा तकिया उठाया और बड़े गौर-से देखने लगीं। उस तकिए में भी ड्रेस नहीं थी।

बोनदीता बोली, “मम्मी आप बिना तकिया खोले कैसे समझ रही हो कि उसमें मेरी ड्रेस नहीं है?’ मम्मी बोलीं, “बोनदीता जिस तकिए में मैंने तेरी ड्रेस डाली थी उस तकिए के ऊपर से ही तेरी ड्रेस का नीले रंग वाला सूट दिखता है।”

बोनदीता बोली, “मम्मी फिर तो मैं भी तकिया देखती हूँ।

ऐसा कहते हुए बोनदीता एक तकिया उठाकर देखने लगी। उसे तकिए के ऊपर से नीला सूट दिखा। तकिया मम्मी को देते हुए बोनदीता बोली, “यह रही मेरी ड्रेस वाली तकिया।’

मम्मी बोनदीता के हाथ से तकिया लेते हुए बोलीं, “हाँ, यही तेरी ड्रेस वाली तकिया है।’

उसकी सिलाई खोलने के लिए मम्मी ने पेटी पर पड़ी पुरानी कैंची उठाई। फिर तकिए की सिलाई की गाँठ को काटने लगीं। कैंची को पेटी पर रखते हुए उन्होंने उस तकिए की सिलाई खोल दी। बोनदीता ने मम्मी के हाथ से ड्रेस ली और उन्हें बड़े गौर-से देखते हुए बोली, “मम्मी यह ड्रेस कितनी सिकुड़ गई है?

मम्मी बोलीं, “अब घर में बक्सा तो है नहीं। अगर मैं बोरी में भरकर टांड़ पर रखती तो पुरानी वाली रजाई की तरह तेरी ड्रेस भी चूहे कुतर देते। इसलिए तकिए में रखी थी कि रोज़-रोज इस्तेमाल होने वाली चीज़ों को चूहे कुतरते नहीं हैं।”

यह सुनकर बोनदीता मम्मी को बड़े गौर-से देखते हुए बोली, “मम्मी क्या मैं यह ड्रेस पहनकर देख सकती हूँ?”

इतना कहते हुए बोनदीता अपने कुर्ते और सलवार को अपने हाथ में लटकाए ऊपर चली गई। घर के ऊपर वाले कमरे का गेट बन्द करके ड्रेस को पास ही पड़ी कुर्सी पर रख दिया। फिर सूट को उठाकर उसके बाजू में अपने दोनों हाथ डाले। बाजू में हाथ डालने के बाद सिर में डालकर पहन लिया। फिर नीचे पहने हुए लोअर को निकालकर उसे भी कुर्सी पर रख दिया। तभी नीचे से मम्मी की आवाज आई, “बोनदीता कपड़े पहन लिए?”

तो वह बोली, “अभी नहीं पहने।”

ऐसा कहते हुए उसने अपनी ग्रे रंग की सलवार पहन ली और सलवार का नाड़ा बाँधते हुए नीचे आई। तभी फिर से मम्मी की आवाज़ आई, “कितना टाइम लगाती है तू कपड़ा पहनने में। जल्दी पहनकर आ और मुझे दिखा कि ड्रेस फिट है या नहीं।”

उनकी बात पूरी होने से पहले ही बोनदीता “मम्मी” कहते हुए सिकुड़ी हुई ड्रेस के साथ उनके सामने बेड पर बैठ गई। और बोली, “मम्मी, देखो मैं ड्रेस पहनकर आ गई। मैं कैसी लग रही हूँ?” मम्मी बोलीं, “बहुत सिकुड़ी-सी लग रही है तू, नहीं-नहीं तेरी...”

संध्या अभी सावदा घेवरा सर्वोदय कन्या विद्यालय, ए ब्लॉक में सातवीं कक्षा की छात्रा हैं। तीन साल से वह अंकुर क्लब की नियमित रियाज़कर्ता हैं। किसी पत्रिका में छपने वाली यह उनकी पहली कहानी है।

प्रवासी पक्षियों के फ्लाइवे

विनता विश्वनाथन

पिछले कुछ महीनों से तुमने अपने आसपास के पेड़-पौधों या झीलों-तालाबों में कुछ अलग पक्षी देखे-सुने होंगे। हर साल एशिया के उत्तरी देशों से और हमारे देश के बर्फीले इलाकों से दर्जनों प्रवासी पक्षी अपने इलाकों की कड़ी ठण्ड और खाने की कमी से बचने भारत के मैदानी इलाकों में आते हैं। इनमें से कई पक्षी बगीचे-जंगलों में दिखते हैं। लेकिन ज़्यादातर जलपक्षी होते हैं जो हमारी नदियों, झीलों, तालाबों में दिखते हैं। इनमें से बहुत ही कम यहाँ ठण्ड के महीनों में बच्चे पैदा करते हैं। यानी कि बच्चे पैदा (प्रजनन) करने के लिए ये जो रंग-बिरंगे अवतार अपनाते हैं वो हम देख नहीं पाते। फिर भी भारत में हज़ारों पक्षी प्रेमी इनका बेसब्री-से इन्तज़ार करते हैं।

प्रवासी पक्षियों के आने-जाने के रास्ते भी तय होते हैं। इन रास्तों को फ्लाइवे कहते हैं। हर फ्लाइवे में सैकड़ों पक्षियों के रास्ते होते हैं – कुछ लम्बी दूरी वाले प्रवासियों के और कुछ कम दूरी वालों के। दिए गए नक्शे में तुम देख सकते हो कि यूरोप और उत्तरी एशिया से भारत में आने-जाने के इनके मुख्य तौर पर दो फ्लाइवे हैं।

1. **मध्य-एशियाई फ्लाइवे** – 29 देशों से भारत में आनेवाले प्रवासी पक्षी इसका इस्तेमाल करते हैं। इनमें 182 किस्म शामिल हैं जिनमें से 29 खतरे में हैं। इन किस्मों की कुल मिलाकर 279 जलपक्षियों की आबादियाँ इस

दुनिया भर में प्रवासी पक्षी जिन रास्तों का इस्तेमाल करते हैं उन्हें कई फ्लाइवे में बाँटा गया है। इस नक्शे में तुम एशिया के तीन फ्लाईवे देख सकते हो।

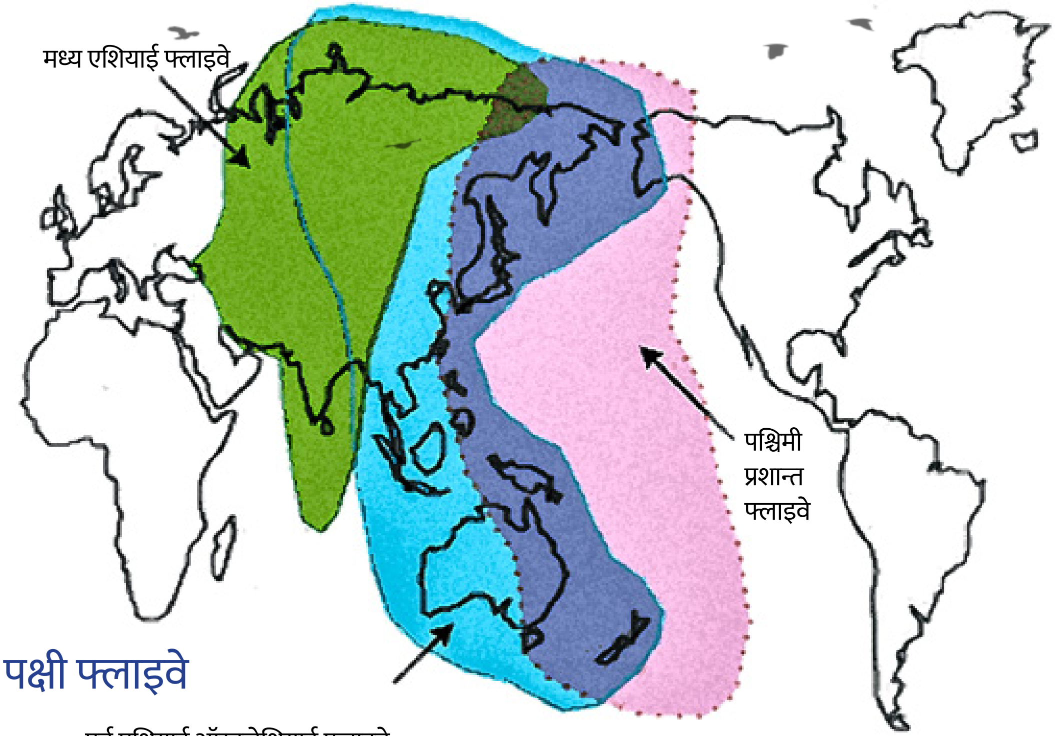

एशियाई प्रवासी पक्षी फ्लाइवे

फ्लाइवे का इस्तेमाल करती हैं। 256 आबादियाँ तो भारत में आती हैं।

भारत में आनेवाले कुछ जलपक्षियों के उदाहरण –

लिटिल स्टिंट — वज़न 20 ग्राम, साइबीरिया से 8000 किलोमीटर तय करके आते हैं

ब्राम्हिनी बत्तख —वज़न 1.2 किलोग्राम, चीन से 1630 किलोमीटर उड़कर आते हैं

स्लेटी वैगटेल — वज़न 17 ग्राम, हिमालय से तमिलनाडु तक 2600 किलोमीटर तय करते हैं

2. पूर्व-एशियाई ऑस्ट्रलेशियाई फ्लाइवे – दुनिया भर के फ्लाइवे में से ये एक मुख्य फ्लाइवे है। क्योंकि इसका इस्तेमाल सबसे विविध किस्म के पक्षी करते हैं जिनमें से कई खतरे में हैं। इसमें उड़कर कुछ पक्षी पूर्व भारत और अण्डमान-निकोबार आते हैं। 250 से भी ज़्यादा आबादियों के 5 करोड़ पक्षी इस फ्लाइवे का इस्तेमाल करते हैं। इनमें से 32 आबादियाँ खतरे में हैं।

सोचो हर साल ये पक्षी अनेक देशों से होते हुए अपने ठिकाने पर पहुँचते हैं। कई तो हिमालय की ऊँचाइयों को लाँदते हुए आते हैं। बीच में कहीं-कहीं रुकते भी हैं। रास्ते में या ठिकाने पर इनको सही हैबिटैट और सुरक्षा न मिले (जिसके विविध कारण हो सकते हैं) तो प्रवासी पक्षियों की ये आबादियाँ खतरे में पड़ जाती हैं। ऐसा हुआ है और हो रहा है। इसीलिए हर फ्लाइवे के देशों का नेटवर्क बनाकर प्रवासी पक्षियों की सुरक्षा के लिए कोशिशें जारी हैं।

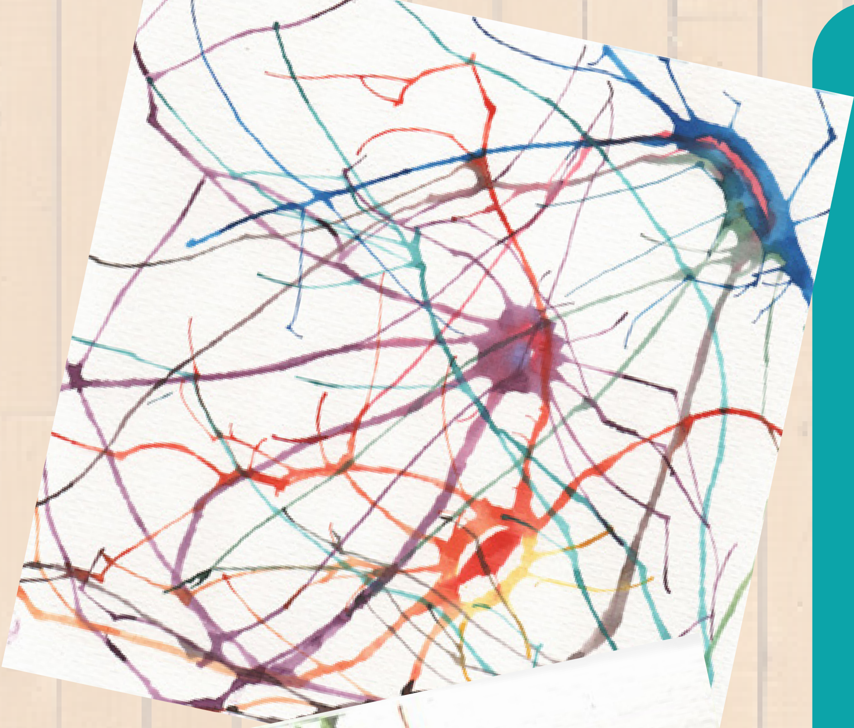

तुम भी बनाओ

सजिता नायर

जुगाड़: वॉटर कलर, पानी, मोटा ब्रश, ड्राइंग शीट, स्ट्रॉ या कोई पुराना पेन जो दोनों तरफ से खोला जा सके।

वॉटर कलर में पानी की दो-तीन बूँदें डालकर गीले ब्रश में रंग लगा लो।

अब कागज़ पर रंग की बूँद टपका दो। चाहो तो कई रंग की बूँदें एक साथ भी डाल सकते हो।

इन बूँदों को तुम जिस भी दिशा में फैलाना चाहो उस दिशा में स्ट्रॉ की मदद से फूँको। तुम्हें तब तक फूँकना है जब तक कि रंग की बूँदें कागज़ पर पूरी तरह फैलकर सूख न जाएँ।

तुम देखोगे कि हर बार अलग-अलग आकार बन रहे हैं। इन आकारों को तुम अलग-अलग रूप दे सकते हो। जैसे कोई राक्षस बन सकता है, कोई जानवर, तो कोई एलियन। तुम्हारी कल्पना है, जो चाहे बना लो।

तुम भी जानो

चिड़ियाघर के निवासियों को कोरोना का टीका देना एक चुनौती

https://spectrumnews1.com/ky/louisville/news/2021/09/24/louisville-zoo-covid-vaccine-for-animals

पिछले डेढ़ सालों में कई जानवरों को कोविड-19 हुआ है, कुछ मर भी गए हैं। तो इनके लिए एक खास टीका बनाया गया है। और इनका टीकाकरण भी मुश्किलों से परे नहीं है। अमेरिका के चिड़ियाघर में रहने वाले गोरिल्ला, तेन्दुए, बब्बर शेर, ऊदबिलाव – इन सबका टीकाकरण हुआ है। गोरिल्ला जैसे बड़े जानवरों को पिंजरे से टिककर बैठने को मनाया जाता है फिर टीका दिया जाता है। छोटे जानवरों को शान्ति से एक जगह बैठा देखकर उन्हें धीरे-धीरे कोंचते हैं – पहले किसी ऐसी चीज़ से जो नुकीली नहीं है, फिर सुई से। इतना ही नहीं, आइसक्रीम और चॉकलेट की रिश्वत भी दी जाती है!

कुएँ में मिला एक नए किस्म का जानवर

https://www.downtoearth.org.in/news/wildlife-biodiversity/new-eel-species-discovered-in-mumbai-well-79461

दुनिया भर में हर साल हज़ारों नए जीवों की खोज होती है। इनमें जानवर और पौधों से लेकर सूक्ष्मजीव तक शामिल होते हैं। अगर सिर्फ जानवरों की बात करें तो 2021 में भारत में जानवरों की 550 से भी ज़्यादा किस्में खोजी गई हैं। इनमें ज़्यादातर किस्में अकशेरुकी (बिना रीड के हड्डी) जानवरों की थीं। ऐसा ही एक जानवर बाममछली (ईल) है जिसे मुम्बई के एक कुएँ में खोजा गया। ये मछली अन्धी है। मुम्बई के जोगेश्वरी इलाके के एक स्कूल के कुएँ में 2019 में पाया गया यह जीव इस साल एक नया किस्म घोषित किया गया। इसका वैज्ञानिक नाम *रख्तामिख्थिस मुम्बा* और सामान्य नाम मुम्बई अन्धी बाममछली है।

मेरा पन्ना

मेरी प्रिय दोस्त

राहिल सैनी
चौथी, एसडीएमसी स्कूल, हौज़ खास, दिल्ली

वैसे तो मेरे बहुत सारे दोस्त हैं। पर सिर्फ एक प्रिय दोस्त है। वो तरिशा है। वह चौथी में पढ़ती है। तरिशा मेरी प्रिय दोस्त है क्योंकि वह कभी झूठ नहीं बोलती। वह मुझे इसलिए भी प्रिय है क्योंकि जब मुझे ज़रूरत होती है तब वह मुझे मदद करती है। और जब कोई हमें तंग करता या करती है तो हम मिलकर उसका सामना करते हैं। वह मेरे पड़ोस में ही रहती है। और मुझे आज याद आ रहा है कि हमने साथ में साइकिल चलाई थी। हमारी आदतें मिलती-जुलती हैं।

चित्र: तुषार प्रुथी, आठवीं, कुन्दन विद्या मन्दिर, लुधियाना, पंजाब

चित्र: नबनीता पाल, कोलकाता बाल भवन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

एक पत्ते की कहानी

कृश
दूसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

एक हरा-पीला पत्ता पेड़ से गिरा। एक गिलहरी भागी-भागी आई। वह पत्ते के ऊपर से निकल गई। एक चिड़िया पत्ते पर आकर बैठी। फिर उड़ गई फुर्र-से। हवा चली और पत्ता भी उड़ने लगा। थोड़ी दूर जाकर रुक गया। तभी कुछ बारिश की बूँदें गिरीं। पत्ता चौंका। एक लड़का उधर आ रहा था। उसने पत्ते को उठाया। उसमें लगी गीली मिट्टी पोंछी। पत्ता उसे बहुत सुन्दर लगा। ध्यान-से उसने पत्ते को अपनी किताब के पन्नों के बीच रख लिया।

बन्दर, चश्मा और फ्रूटी

अभिवीरा सक्सेना
पहली, सागर पब्लिक स्कूल, भोपाल, मध्य प्रदेश

एक बार हम पूरे परिवार के साथ मथुरा गए थे घूमने। वहाँ के हर मन्दिर में बहुत सारे बन्दर थे। जहाँ देखो वहाँ बन्दर। ऊपर बन्दर, नीचे बन्दर, दाएँ बन्दर, बाएँ बन्दर... अरे! हर जगह बन्दर ही बन्दर।

हम सब लोग मन्दिर में दर्शन कर रहे थे तभी एक बन्दर आया और बड़ी चालाकी-से मेरी दादी का चश्मा उनकी आँखों से निकालकर ले गया और दीवार पर जाकर बैठ गया। फिर मेरे बब्बा जी दौड़कर फ्रूटी लेकर आए और बन्दर को दे दिए...। फिर क्या था बन्दर ने एक हाथ से फ्रूटी ली और दूसरे हाथ से दादी का चश्मा लौटा दिया। हम सब ज़ोर-ज़ोर से हँस पड़े।

आप जब कभी भी मथुरा जाओ तो वहाँ के बन्दरों से ज़रा बच के रहना क्योंकि वे बहुत चालाक होते हैं। अब आप सोच रहे होंगे कि हमने बन्दर को फ्रूटी ही क्यों दीं, कुछ और क्यों नहीं दिया। वो इसलिए कि वहाँ के लोगों से हमें पता चला कि बन्दर को कुछ और दोगे तो वो आपका सामान नहीं वापस करेगा क्योंकि उनको फ्रूटी ही पीनी होती है। लेकिन याद रखिए वहाँ एक ही बन्दर था। यदि बन्दर झुण्ड में होते तो एक फ्रूटी से काम नहीं बनता। सारे बन्दरों को फ्रूटी पिलानी पड़ती है। नहीं तो आपका चश्मा तो गया समझो।

(यह वाकया अभिवीरा ने अपनी माँ को सुनाया और उन्होंने इसे लिखा है।)

चित्र: दीक्षा देवादुला, एलकेजी, राष्ट्रोत्थान विद्या केन्द्र, बेंगलूरु, कर्नाटका

चित्र: शानवीर, दूसरी, गुरु रामदास पब्लिक हाई स्कूल, पाना, सिरसा, हरियाणा

जाड़े का मज़ा

अपूर्वा गजपाल
सातवीं, दुर्ग, छत्तीसगढ़

पिछले साल की बात है। जाड़े के मौसम में मैं अपने दादा-दादी के गाँव गई थी। चूँकि गाँव में पेड़-पौधे बहुत होते हैं इसलिए वहाँ जाड़ा बहुत पड़ता है। सुबह की गुनगुनी धूप में बैठने का मज़ा ही कुछ और था। रात को लकड़ियों का अलाव जलाकर उसके चारों तरफ सब बैठकर आग तापते थे। आग में आलू को भूनकर गरमागरम खाने में बहुत मज़ा आया। गाँव का जाड़ा मेरे लिए यादगार बन गया।

बस अब बहुत हो गया!

रितिशा शर्मा
सातवीं, डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

आजकल मुझे सोने के लिए कम वक्त मिल रहा है। क्योंकि मेरे पास अब कुछ ज़्यादा ही स्कूल का काम करने के लिए पड़ा रहता है। हर दिन मेरी कक्षा में मुझे नए काम मिलते रहते हैं। मैं इतना सारा काम नहीं कर सकती एक दिन में।

शायद मुझे रीमा मैम से इसके बारे में बात करनी चाहिए। स्कूल के अलावा भी मेरे पास एक ज़िन्दगी है। अगर मैं काम ही करती रहूँगी, तो मैं अपने परिवार के लिए वक्त नहीं निकाल पाऊँगी। दो सालों में मेरा भाई कॉलेज चला जाएगा। अगर मैं अभी उसके साथ वक्त नहीं बिताऊँगी, तो कब बिताऊँगी?

मैं हर रोज़ उठती हूँ, फिर स्कूल के लिए बैठ जाती हूँ। उसके बाद काम करती हूँ। एक और क्लास के लिए जाती हूँ। फिर खाना खाती हूँ और सो जाती हूँ। बस अब बहुत हो गया है। मैं रीमा मैम से बात करके उनको सब कुछ बताऊँगी। उसके बाद मैं अपने परिवार के साथ हर रोज़ बात करूँगी और अधिक वक्त बिताऊँगी।

चित्र: राजेश्वरी भिरंगी, चौथी, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, महाराष्ट्र

1. इस छत्ते का एक भाग गिर गया है, बता सकते हो कि वह कौन-सा भाग है?

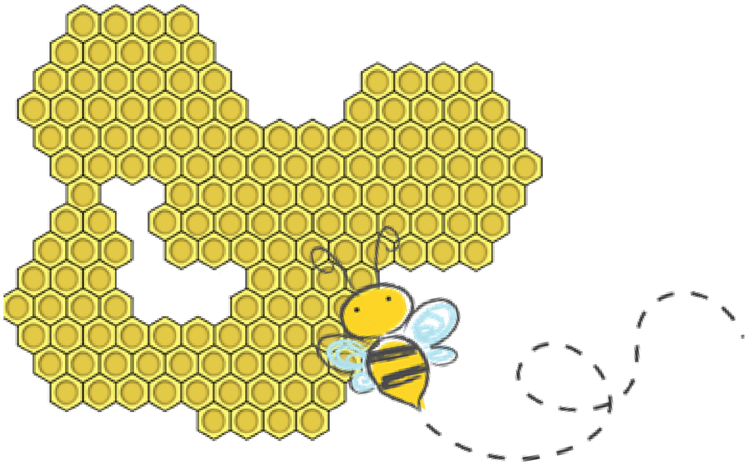

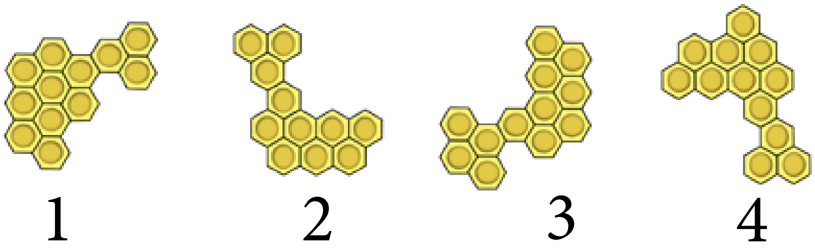

2. एक व्यक्ति किसी की फोटो देख रहा है तभी उसका दोस्त उससे पूछता है कि यह कौन है? वो कहता है, “हूँ तो वैसे मैं इकलौता, लेकिन इस आदमी के पिता मेरे पिता के बेटे हैं।” बताओ उस फोटो में कौन था?

3. पाँच माले की एक बिल्डिंग के नीचे एक लाश मिलती है। डिटेक्टिव को घटनास्थल पर बुलाया जाता है। डिटेक्टिव पहले माले पर जाकर खिड़की खोलता है और एक सिक्का बाहर उछालता है। फिर वह दूसरे माले पर जाता है और यही चीज़ दोहराता है। हरेक माले पर जाकर वह ऐसा ही करता है। पाँचवें माले पर पहुँचते ही उसे पता चल जाता है कि यह खुदकुशी नहीं, बल्कि कत्ल का मामला है। कैसे?

4. इस ताले के कोड का पता लगाओ

3 4 2	दो अंक सही हैं लेकिन गलत जगह पर हैं
2 7 3	एक अंक सही है और सही जगह पर है
1 6 5	एक अंक सही है और सही जगह पर है
8 5 3	कुछ भी सही नहीं है
1 3 4	एक अंक सही है और सही जगह पर है

5. एलियन परिवार की इन दो फोटो में 8 अन्तर हैं, क्या तुम उन्हें ढूँढ सकते हो?

6. दिए गए चित्र की हर पंक्ति व कॉलम में एक अलग एलियन का चेहरा होना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सा चेहरा आना चाहिए?

प्यास लगे तो पी लेना, भूख लगे तो खा लेना और ठण्ड लगे तो जला लेना। बोलो क्या?

(माचिस)

ठण्ड शुरू होते ही मैं आए दिन गिरती रहती हूँ, लेकिन फिर भी मुझे चोट नहीं लगती। बताओ मैं कौन हूँ?

(ओस)

मैं हर दिन में कई बार दाढ़ी बनाता हूँ लेकिन फिर भी मेरी दाढ़ी वैसी की वैसी ही रहती है? मैं कौन हूँ?

(नाई)

मेरी शाखाएँ हैं, लेकिन न फल है, न पत्तियाँ और न ही तना। बताओ मैं कौन हूँ?

(बैंक)

पीला पोखर पीले अण्डे
जल्दी बता नहीं तो मारूँ डण्डे

(पकौड़ी वाली कढ़ी)

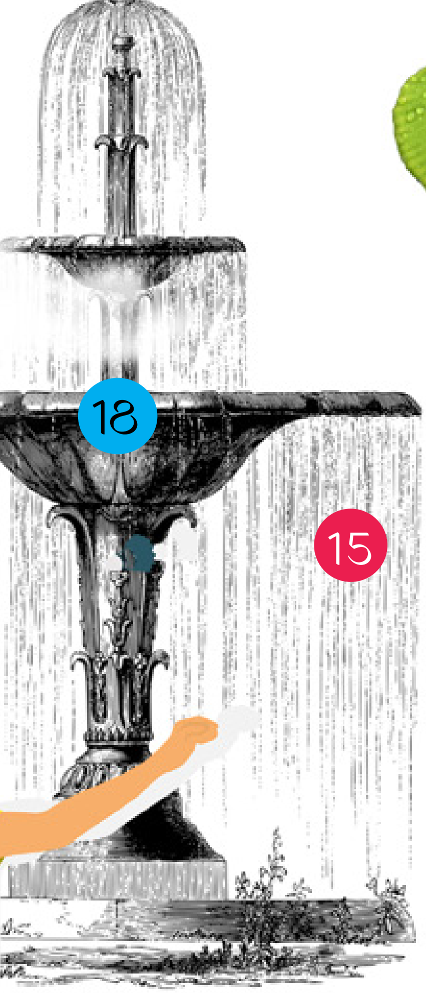

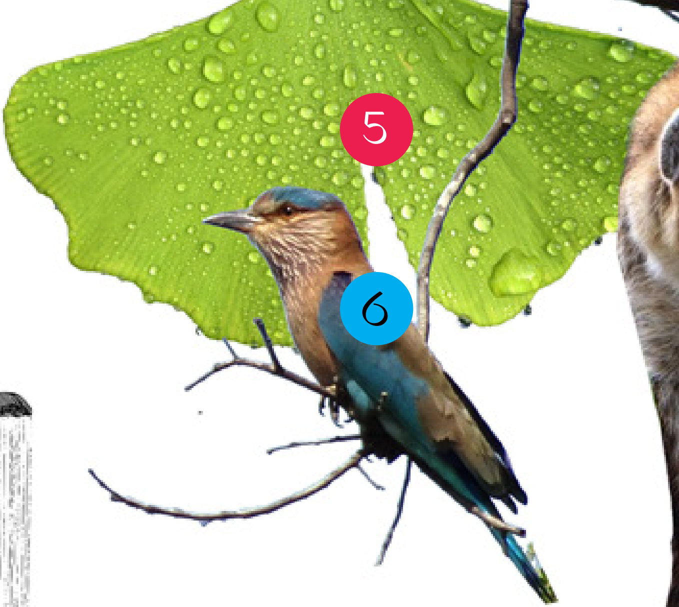

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

सुडोकू 49

1	4				8	7	5	
9	6	5	7			2	8	
8						4		1
				8	2	5	7	
		4						2
	2	9		3	7			
2	7	8	1					
3					4			
	5	6		7	3			

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

जवाब माथापच्ची

1.

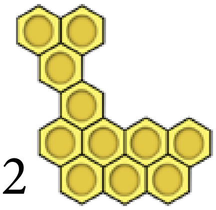

2

2. उसका बेटा।

3. पाँचवें माले की खिड़की खुली हुई थी।

4. 264

5.

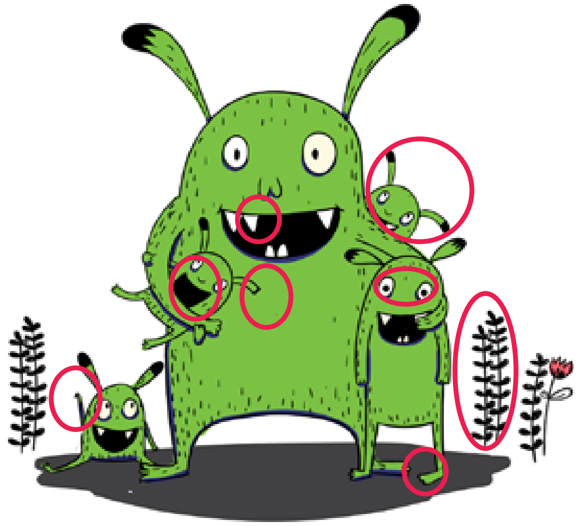

6.

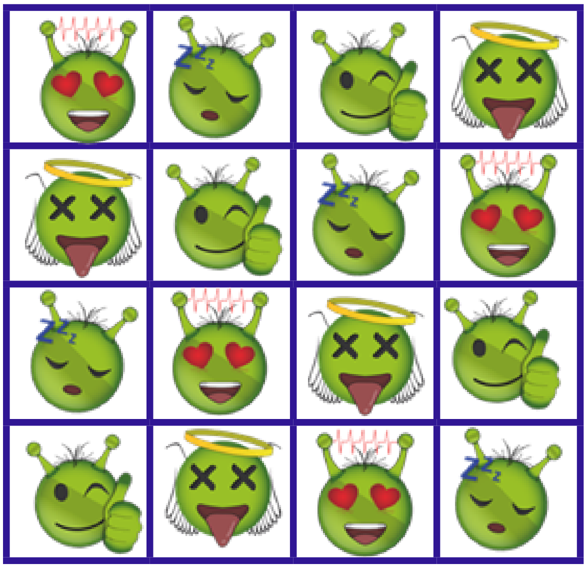

दिसम्बर की चित्रपहेली का जवाब

			1 जं	ग	2 ल			
			जी		इ			
	3 स	वा	र		4 का	र्ट	5 न	
	फा			6 अ			दि	
7 बे	री			म			8 या	9 क
ल		10 प	ह	ल	वा	न		दं
11 चा	12 क			ता			13 सै	ब
	छु			स			म	
	14 आ	ई	15 ना		16 को	य	ल	
			वि		ट			
			17 क	ने	र			

सुडोकू-48 का जवाब

4	3	5	1	8	2	6	9	7
1	6	7	5	4	9	3	2	8
8	2	9	3	7	6	4	5	1
2	7	6	8	9	4	1	3	5
3	1	4	2	5	7	8	6	9
5	9	8	6	1	3	7	4	2
9	4	1	7	3	5	2	8	6
6	8	3	9	2	1	5	7	4
7	5	2	4	6	8	9	1	3

सबसे पहले लाइफ इंश्योरेंस
LIC's BIMA JYOTI
Plan No. 860 UIN: 512N339V01
एक नॉन-लिंक्ड प्लान जो मूल बीमा राशि पर गारंटीकृत वृद्धि के साथ आपकी आय को भरपूर बढ़ाए.
LIC's TECH-TERM
PLAN NO. 854 UIN: 512N333V01
एक कम लागत वाला ऑनलाइन प्योर प्रोटेक्शन प्लान जो आपके परिवार की आर्थिक सुरक्षा को सुनिश्चित करे.
LIC's SIIP
Plan No: 852 UIN 512L334V01
एक नियमित प्रीमियम यूलिप जो जीवन बीमा संरक्षण और निवेश में वृद्धि दिलाए.
LIC's CANCER COVER
Plan No. 905 UIN No. 512N314V02
एक नॉन-लिंक्ड नियमित प्रीमियम हेल्थ प्लान जो कैन्सर होने पर आपकी आर्थिक सहायता करे.
महामारी को आपके सुरक्षा प्लान में विलंब मत करने दीजिए
आज ही अपनी एलआईसी पॉलिसी लीजिए
LIC's SARAL Jeevan Bima
Plan No.: 859 UIN: 512N341V01
एक कम लागत वाला नॉन-लिंक्ड शुद्ध जोखिम प्लान जो आपके परिवार को आर्थिक सुरक्षा दिलाए.
LIC's JEEVAN AKSHAY VII
UIN- 512N337V01 Plan No. 857
एक तात्कालिक वार्षिकी प्लान जो जीवनभर के लिए गारंटीकृत आय दिलाए.
LIC's BACHAT PLUS
Plan No: 861 UIN: 512N340V01
एक 5 वर्षीय/एकल प्रीमियम नॉन-लिंक्ड प्लान जो बचत कराए और सुरक्षा दिलाए.
LIC's NEW JEEVAN SHANTI
UIN- 512N338V01 Plan No. 858
एक आस्थगित वार्षिकी प्लान जो जीवनभर के लिए आपकी नियमित आय सुनिश्चित करे.
LIC's NIVESH PLUS
Plan No: 849 UIN:512L317V01
एक एकल प्रीमियम यूलिप जो मार्केट से लिंक्ड निवेश के साथ जोखिम संरक्षण पर नियंत्रण दिलाए.
Pradhan Mantri Vaya Vandana Yojana
वरिष्ठ नागरिकों के लिए 10 वर्ष अवधि हेतु एक तात्कालिक पेन्शन प्लान
LIC/PRA/2021-22/06/Hin
उपरोक्त सभी प्रोडक्ट्स www.licindia.in पर ऑनलाइन उपलब्ध हैं
अधिक जानकारी के लिए आप अपने बीमा एजेन्ट/नज़दीकी एलआईसी शाखा से संपर्क कर सकते हैं
कृपया विस्तृत विक्रय पुस्तिका हमारी वेबसाइट पर देखें
डाउनलोड करें एलआईसी मोबाइल ऐप "MyLIC"
विज़िट करें: licindia.in
कॉल सेन्टर सर्विस (022) 6827 6827
LIC India Forever
IRDAI Regn No.: 512
LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA
मध्य क्षेत्र, भोपाल
हर पल आपके साथ
नकली फोन कॉल्स और झूठे/धोखाधड़ी पूर्ण ऑफर्स से सावधान रहें. आईआरडीएआई जीवन बीमा पॉलिसियों की बिक्री, बोनस घोषित करने या प्रीमियमों के निवेश जैसी गतिविधियों में संलग्न नहीं है. ऐसे फोन कॉल प्राप्त करने वाले व्यक्तियों से अनुरोध है कि वे पुलिस में इसकी शिकायत दर्ज करवाएँ. बिक्री समापन से पूर्व अधिक जानकारी या जोखिम घटकों, नियम और शर्तों के लिए प्लान की बिक्री पुस्तिका को ध्यानपूर्वक पढ़ें.

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

चित्र: दर्शना गाडेकर, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, महाराष्ट्र

चित्र: रणदीप काकडे, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, महाराष्ट्र

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन